पूर्वोत्तर भारत में पधारने की पूरजोर अर्ज

सरदारशहर 22 अक्टूबर, 2010

पूर्वोत्तर भारत के गुवाहाटी आदि क्षेत्रों से बड़ी संज्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने आचार्य महाश्रमण से पूर्वांचल में पधारने की पूरजोर अर्ज की। उन्होंने शहर के मुज्य मार्गों से होते हुए जुलूस के रूप में तेरापंथ भवन पहुंचकर श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत किया। गुवाहाटी प्रवासी बिमलकुमार नाहटा से प्रारंभ हुए इस अर्ज के कार्यक्रम में सर्वप्रथम वहां के राज्यपाल का संदेश एवं उनके लिखित अनुरोध का वाचन निर्मल कोटेचा ने किया एवं जयचन्दलाल मालू, अभयराज डागा ने आचार्यप्रवर को समर्पित किया। बंगईगांव के झंवरलाल महनोत, शिलोंग के बाबुलाल सुराणा, बरपेटा रोड के रेंवतमल बैंगानी, नौगांव के उत्तमचन्द नाहटा, विजयसिंह चौरड़िया, राजकरण सिरोहिया आदि ने भावपूर्ण अर्ज प्रस्तुत की।

इस मौके पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मेरी जब भी दूर यात्रा का कार्यक्रम बनेगा तो सबसे पहले पूर्वांचल को अवसर दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि अभी मेरी प्राथमिकता धर्मसंघ से मिलने की है।

किशोर मण्डल का छठा राष्ट्रीय अधिवेशन सज़्पन्न

आचार्य महाश्रमण ने तेरापंथ किशोर मण्डल के छठे राष्ट्रीय अधिवेशन की सज़्पनता पर कहा कि किशोर अवस्था ज्ञानार्जन की अवस्था है। किशोरों को ज्ञान प्राप्ति में पुरुषार्थ करना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति से एकाग्रचित बनूंगा स्वयं सन्मार्ग पर चलता हुआ दूसरों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दूंगा, इस उद्देश्य के साथ अध्ययन करें। उन्होंने कहा कि किशोरों का लक्ष्य रहना चाहिए कि पुरुषार्थ का जीवन जीना है। किशोरों को गुस्से पर भी नियंत्रण सीखना चाहिए। जो गुस्सा नहीं करता है वह व्यवहार कुशल बन सकता है। उन्होंने ज्ञानशाला को संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला बताते हुए कहा कि किशोरों में सदसंस्कारों का निर्माण होना चाहिए। इस मौके पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौतमचन्द डागा, महामंत्री रमेश सुतरिया, किशोर मण्डल प्रभारी श्रेयांस बरड़िया अपने विचार रखे। परिषद् के प्रभारी मुनि दिनेश कुमार ने किशोरों में उत्साह का संचार करने वाला वक्तव्य दिया।

इस अवसर पर गत 8 जुलाई, 2010 गरीब रथ रैल हादसे में तीन व्यक्तियों की जान बचाने वाला छात्र शुभम छाजेड़ को किशोर मण्डल के अधिवेशन में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गौतम डागा, मंत्री दिनेश सुतरिया ने प्रतिक चिन्ह, गोल्ड मेडल द्वारा सज़्मान किया।

देशभर में संचालित होते हैं 355 केन्द्र

बेरोजगारों के लिए वरदान साबित हो रहा है अहिंसा प्रशिक्षण

तेरापंथ भवन में लगी है केन्द्रों में निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी

सरदारशहर 22 अक्टूबर, 2010

मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रशिक्षण के तौर पर चार सूत्री कार्यक्रम देकर न केवल अपराधिक मनोवृत्ति वालों का हृदय परिवर्तन कर मानव को मानव बनाने का प्रयास किया बल्कि इसके साथ ही अहिंसात्मक बेरोजगार प्रशिक्षण को जोड़कर बेरोजगारी के कारण अपनी शक्ति का सञ्यक् उपयोग नहीं कर पाने वाले युवाओं एवं महिला वर्ग का उद्धार किया। उनके चिंतन की निष्पत्ति के तौर पर आज सञ्पूर्ण देश में 355 केन्द्रों पर दिया जाने वाला अहिंसा प्रशिक्षण अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित हो रहा है। इन केन्द्रों से चयनित सात राज्यों के 37 केन्द्रों द्वारा निर्मित चित्ताकर्षण एवं विविध उपयोगी वस्तुओं की लगी प्रदेर्शनी को देखकर ऐसा लगता है कि अहिंसा प्रशिक्षण बेरोजगारों के लिए वरदान साबित हो रहा है। इन केन्द्रों पर प्रशिक्षण देने वाले अणुव्रत शिक्षक संसद के कार्यकर्त्ताओं ने विहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के छोटे-छोटे गांवों में बेरोजगार युवाओं एवं महिलाओं को प्रेरित कर उनको सिलाई, बुनाई, अगरबत्ती, मोमबत्ती, पेन्सिल के कतरन से बने विविध आकृतियां, बालू से बने देवताओं के चित्र, सजावट के उपयोग में आने वाले पॉट पेन्टिंग, खिलोने, एञ्ब्रोडरी के विविध प्रकार हेण्डवियर एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं का निर्माण करने का प्रशिक्षण देने के साथ ही कञ्प्यूटर का प्रशिक्षण भी प्रदान कर युग के साथ चलने हेतु ग्रामीणों में उत्साह का संचार किया है। इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने से पहले जो कुछ भी नहीं कमा पाते थे वे आज हजारों रुपयों का उद्योग चलाते हैं। ऐसे एक नहीं हजारों परिवार इस प्रशिक्षण से लाभान्वित हो रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण के प्रवास स्थल तेरापंथ भवन के पण्डाल में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन करने वाले आन्ध्रप्रदेश के विधायक सी. राजेश्वर एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी भी वस्तुओं को देखकर आश्चर्यचकित थे।

संसद के राष्ट्रीय संयोजक भीखमचन्द नखत, विशिष्ट मार्गदर्शक, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, मंत्री धर्मचन्द जैन 'अन्जाना' आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं के देखरेख में चलने वाले अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में 3 लाख विद्यार्थियों के देखरेख में चलने वाले अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में 3 लाख विद्यार्थियों को अहिंसा की पृष्ठभूमि से परिचित कराया गया है और हृदय परिवर्तन का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया है। इन केन्द्रों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बच्चों एवं बेरोजगार युवाओं, महिलाओं का मानना है कि इन केन्द्रों के द्वारा देश का स्वर्णीम भविष्य निर्मित हो रहा है। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने न केवल अहिंसा प्रशिक्षण को जरूरी बताया बल्कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से अणुव्रत को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद भी प्रदान किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने संसद के कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान कर इस प्रशिक्षण से देश को पुनः आध्यात्मिक विश्वगुरु बनाने और विकास के नव क्षितिज खोजने का जज्बा पैदा किया।

महासती सुभद्रा नाटय प्रस्तुति 24 को

स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ कन्या मण्डल द्वारा प्रस्तुत महासती सुभद्रा नाटक प्रस्तुत किया जाएगा, जो स्थानी बाल मन्दिर विद्यालय के हॉल में आयोजित होगा। इस नाटक में महासती सुभद्र के जीवन चरित्र को दर्शाया जाएगा।